इकाई 10 भारत की एक्ट ईस्ट नीति

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 परिचय

10.2 पृष्ठभूमि

10.3 'लुक ईस्ट' नीति

10.4 ईस्ट की ओर उन्नमुख होकर, जुडने का प्रयास

10.4.1 राजनीतिक जुड़ाव

10.4.2 आर्थिक संपर्क

10.4.3 रक्षा एवं सामरिक सहयोग

10.5 महाशक्तियां और 'लुक ईस्ट' नीति

10.6 'एक्ट ईस्ट' नीति

10.7 'एक्ट ईस्ट' नीति और क्षेत्रीय सुरक्षा

10.8 सारांश

10.9 कुछ उपयोगी संदर्भ

10.10 बोध प्रश्नों के उत्तर, आपकी प्रगति के परीक्षण हेतु

10.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप भारत की एक्ट ईस्ट नीति के विषय में पढ़ेगें। इस इकाई को पढ़ने के पश्चात्, आप इस योग्य हो जाएंगे कि:–

- 'लुक ईस्ट' नीति के महत्व के बारे में, जिसकी शुरूआत 1994 में हुई थी।
- 'लुकिंग ईस्ट' की नीति का ईस्ट से जुड़ाव में रूपांतरण एवं इसके विभिन्न आयामों– आर्थिक, राजनीतिक और सामरिक रूपों के बारे में।
- इंडो–पैसिफिक (हिन्द–प्रशांत) क्षेत्र में विकसित हो रहा सुरक्षात्मक ढ़ाचा तथा
- मोदी सरकार के तहत 'एक्ट ईस्ट नीति'।

10.1 परिचय

यह समझने के लिए कि एक्ट ईस्ट नीति क्या है, जिसकी घोषणा भारतीय प्रधानमंत्री ने 2014 में की थी, उस पृष्ठभूमि को जानना जरूरी है जिसके कारण इस नीति को लागू किया गया। इस नीति का प्रादुर्भाव 1990 के दशक के आरम्भ में देखा जा सकता हैं, जब भारत ने 'लुक ईस्ट नीति' नामक एक प्रमुख नई विदेश नीति की पहल करते हुए शुरूआत की थी। इसकी आवश्यकता आर्थिक, सामरिक एवं राजनीतिक जैसे कारकों के संयोजन के हुई थी। 1991

में सोवियत संघ के विघटन के साथ शीत युद्ध (कोल्ड वॉर) का अंत हो गया, आर्थिक विकास के मॉडल के रूप में समाजवाद पर पर्दा गिरा, दशकों तक भारत की विकास की रणनीति को निर्देशित करने वाला 'लाइसेंस–परमिट राज' 1991 में उजागर हो गया– देश के पास दो सप्ताह से अधिक के आयात के लिए भुगतान हेतु कोई विदेशी मुद्रा नहीं थी। विवशतावश, भारत को तत्कालीन वित्तमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के मातहत आर्थिक उदारीकरण को आरम्भ करना पड़ा। राजनीति को अर्थशास्त्र के लिए मार्ग प्रशस्त करना पड़ा। आर्थिक वैश्वीकरण ने गति पकड़ी, कई विकासशील देशों ने अपनी आयात–निर्यात व्यवस्था को उदार बना दिया था एवं वे उच्च आर्थिक विकास दर प्राप्त कर रहे थे। इन परिस्थितियों ने प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा रॉव की सरकार को पूर्व एवं दक्षिण पूर्व एशिया की गतिशील अर्थव्यवस्थाओं की ओर उन्नमुख किया। 1990 के दशक के आरम्भ तक, पूर्वी एशिया सबसे तेजी से बढ़ते एवं आर्थिक रूप से दुनिया में सबसे गतिशील क्षेत्र के रूप में उभरा था। नव–उदारीकृत भारतीय अर्थव्यवस्था को इस क्षेत्र के साथ जुड़ने के तरीके खोजने पड़े। यद्यपि पूर्वी एशियाई देशों को क्षेत्रीय सुरक्षा में योगदान करने में भारत की संभावित भूमिका की सराहना करने में कुछ समय लगा एवं साथ ही प्रचुर मात्रा में इसकी मानव संसाधनों सहित एक वृहत बाजार के रूप में आर्थिक क्षमता को पहचानने में भी। जैसे–जैसे 'लुक ईस्ट' नीति ने जड़े जमाना आरम्भ किया, यह धीरे–धीरे बहु–आयामी बन गई जिसमें आर्थिक, राजनीतिक और रक्षा/रणनीतिक पहलू शामिल थे। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह भारत द्वारा कई दशकों में की गई सबसे सफल पहलों में से एक थी। इस नीति के विस्तार के लिए, कई अन्य आयामों का शामिल करके संबंधों को और गहरा करने हेतु एवं क्षेत्रीय मामलों में अपनी समग्र भागीदारी को बढ़ाने के लिए, भारत के लिए अपने जुड़ाव को तीव्र करना अनिवार्य हो गया। इस प्रकार 'एक्ट ईस्ट' नीति भारत सरकार द्वारा किए जा रहे सक्रिय उपायों का प्रतिबिंब हैं। भारत के लिए पूर्वी एशिया को शामिल करने हेतु एक सुदृढ़ रणनीति विकसित करना अनिवार्य हो गया हैं क्योंकि यह क्षेत्र केंद्रीय आकर्शण का नया वैश्विक केंद्र होगा एवं यहां के विकास के अत्यधिक प्रभाव होंगे, भले ही यह क्षेत्र अपने आर्थिक और सुरक्षा ढ़ांचे में मौलिक परिवर्तन से गुजर रहा हों। बहरहाल, इस क्षेत्र में भारत की भागीदारी और हित तीव्रता से बढ़ रहे है एवं इस पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

10.2 पृष्ठभूमि

एक्ट ईस्ट नीति अपेक्षाकृत की उत्पत्ति हो सकती है, परन्तु भारत पूर्वी एशिया के साथ परस्परिक प्रभाव के विषय में 2500 से अधिक वर्षो से पूर्व की ओर देख रहा है। दक्षिण पूर्व एशिया एवं उससे आगे भारत के संबंध इतने जीवंत थे कि कम से कम तीन देश ऐसे हैं जिनके नामकरण भारत से व्युत्पन्न हुए, जैसे इंडोनेशिया (इंडो–नेशिया अर्थात द्वीप समूह), सिंगापुर और कंबोडिया (खंबोज)। प्राचीन काल में सम्पूर्ण पूर्वी एशियाई क्षेत्र को जितने आयामों से भारत ने प्रभावित किया, किसी अन्य देश ने नहीं। भारतीय, चीनी एवं जापानी व्यापारी दक्षिण पूर्व एशिया के उन शहरो में जहां बदंरगाह थे, वहां के स्थानीय व्यापारियों के साथ न केवल वाणिज्यिक गतिविधियों के लिए बल्कि कई अन्य चीज़ों के आदान–प्रदान के लिए मिलते थे। इस प्रकार, जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में कोई भी भारतीय प्रभाव को एक या दूसरे तरीके से देख सकता है जैसे कला एवं वास्तुकला, भाषा और साहित्य, संस्कृति एवं सभ्यता, नृत्य तथा नाटक, धर्म और आध्यामिकता इत्यादि के प्रभाव म्यांमार से चीन तक और जापान से वियतनाम तक दृष्टिगत होते है। विगत् दो सहस्राब्दियों से भारत और पूर्वी

एशिया एवं विशेष रूप से दक्षिण पूर्व एशिया के मध्य संबंधों को चिंहित करने वाले जीवंत संबंध, उपनिवेशवाद के आरम्भ के साथ बुरी तरह से बाधित हो गए थे। औपनिवेशिक शासकों ने मेल–जोल पर आधारित संबंधों की चिंता किए बिना एक नए अन्य तरह के संबंध थोपे जो उनके व्यावसायिक हितों के अनुकूल थे। इस प्रकार, केवल उत्तर–औपनिवेशिक युग में ही संपर्को को पुनः स्थापित करने के लिए ठोस प्रयास किए गए थे। इसे दृष्टिगत रखते हुए, भारत ने एशियाई देशों के बीच संबंधों को सुदृढ़ करने एवं एकजुटता को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए, जिसे सामान्यतौर से पूर्वी एशिया और विशेष रूप से दक्षिण पूर्व एशिया के साथ भारत के जुड़ाव का प्रथम चरण भी माना जा सकता है। एशियाई संबंध सम्मेलन का आयोजन मार्च–अप्रैल 1947 मे नई दिल्ली मे हुआ जो सबसे महत्वपूर्ण था, जिसे स्वतंत्रता आंदोलन की अगुवाई करने वाले राष्ट्रवादी नेताओं ने आयोजित किया था, जिसमें पूरे एशिया की प्रमुख हस्तियों को एक साथ लाया गया था। जनवरी 1949 में इंडोनेशिया के स्वतंत्रता आंदोलन के समर्थन में एक विशेष सम्मेलन आयोजित किया गया था, जिसने डच उपनिवेशवादियों के खिलाफ वैश्विक जनमत जुटाने में मद्द की। भारत 1950 के दशक के आरम्भ में संयुक्त राष्ट्र के तत्वाधान में कोरिया में शांति अभियान के लिए सैनिकों की आपूर्ति करने वाले देशों में अग्रणी था। शीत युद्ध (कोल्ड वॉर) के जोर पकडने पर भारत के द्वारा उठाए गए सक्रिय कदमों एवं इसके तटस्थ रूख के कारण, इसे वियतनाम प्रकरण पर 1954 के जिनेवा समझौते के तहत स्थापित अंतर्राष्ट्रीय नियंत्रण आयोग का अध्यक्ष बनाया गया था। एशियाई एकता को बढ़ाने के लिए नई दिल्ली ने अपने प्रयासों के हिस्से के रूप में, भारत ने अप्रैल 1955 में प्रसिद्ध एफ्रो–एशियाई सम्मेलन (जिसे बांडुंग सम्मेलन भी कहा जाता है) को सह–प्रायोजित किया। भारत ने द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् जापान को वैश्विक मुख्यधारा में वापस लाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई एवं वियतनाम में फ्रांसीसी औपनिवेशिक शासन के खिलाफ हो ची मिन्ह के नेतृत्व वाले संघर्श का भी पुरजोर समर्थन किया। 1949 में चीनी कम्युनिष्ट पार्टी के तहत पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के उभरने के बाद, इसका स्वागत करने और राजनयिक मान्यता देने वाले देशों में से एक अग्रणी देश भारत था। अतः, कोई भी देख सकता है कि अन्य क्षेत्र की तुलना में पूर्वी एशियाई मामलों में भारत की सक्रिय भागीदारी है। काफी हद तक, भारत की प्रांरभिक विदेश नीति पूर्वी एशिया के विकास से काफी प्रभावित थी।

तारतम्यता की इस गति को कई कारणों से कायम नहीं रखा जा सका। पूर्व एवं दक्षिण पूर्व एशिया में तीव्र शीत युद्ध के मद्देनजर भारत के गुटनिरपेक्ष रूख की सीमित अपील थी। पूर्वी एशिया का लगभग हर देश शीत युद्ध से किसी न किसी रूप में प्रभावित हुआ था, जो बढ़ते हुए संशस्त्र कम्युनिस्ट आंदोलनों और कम्युनिष्ट विरोधी धर्मयुद्धों द्वारा चिंह्नित था। साम्यवाद को नियंत्रित करने से युक्त ट्रूमैन सिद्धांत के तहत कार्य करते हुए, अमेरिका ने 1954 में दक्षिण पूर्व एशियाई संधि संगठन (सीएटो) के गठन में दक्षिण पूर्व एशिया का नेतृत्व किया। उनके शीत युद्ध के दृष्टिकोण ने भारत के गुटनिरपेक्षता को स्वीकार नहीं किया। साथ ही, बांडुंग सम्मेलन को भारत के संबंध में एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में माना जा सकता हैं क्योंकि नेहरू ने अपने को उपेक्षित महसूस किया क्योंकि सम्मेलन की कार्यवाही (जो इंडोंनेशिया में बांडुंग मे आयोजित की गई थी) में राष्ट्रपति सुकर्णो एवं चीन के प्रधानमंत्री चाउ एन–लाई का वर्चस्व था और इसलिए भारत की विदेश नीति में इस क्षेत्र की प्राथमिकता को कम कर दिया गया था। इसके अतिरिक्त, युद्धों की एक श्रृंखला को जिसे भारत को जबरन लड़ना पड़ा, अतः नई दिल्ली को वैश्विक मामलों में सक्रिय रूप से शामिल होने के बजाय

समीप के पड़ोसी से अपनी सुरक्षा चिंताओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मजबूर होना पड़ा। भारत को प्रमुखता से तब पहचाना गया, जब उसने कंबोडियाई सरकार को राजनयिक मान्यता प्रदान की, जिसे वियतनाम द्वारा उसके सैन्य हस्तक्षेप के पश्चात् स्थापित किया गया था, जिसने 1980 में चीन समर्थक पोल पॉट के भयानक शासन को हटा दिया था। तब तक भारत और पूर्वी एशिया के मध्य काफी राजनीतिक एवं आर्थिक खाई बन चुकी थी। जबकि पूर्वी एशिया अभूतपूर्व प्रगति के साथ आर्थिक रूप से आगे बढ़ रहा था, भारत बढ़ती बेरोजगारी, अशिक्षा एवं गरीबी के दलदल में फंस गया था।

10.3 'लुक ईस्ट' नीति

सौभाग्य से, भारत के लिए शीत युद्ध अचानक समाप्त हो गया, उसी समय तीव्र आर्थिक संकट का दौर चला, जिसने भारतीय अर्थव्यवस्था को तथाकथित 'लाइसेंस–परमिट' राज से मुक्त करने के लिए कई पहलों को आरम्भ करने हेतु मजबूर किया गया था। सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में से एक विकास को बढ़ावा देने के लिए निवेश को आकर्षित करना एवं आर्थिक विकास में व्यापार की भूमिका को बढ़ाना था। इन दोनों कारणों से नई दिल्ली को अपनी आर्थिक गतिविधियों के क्षेत्र को पूर्व की ओर मोड़ना पड़ा, जो तब तक वैश्विक अर्थव्यवस्था के नए केंद्र के रूप में उभर रहा था। यह विख्यात 'लुक ईस्ट' नीति के रूप में सामने आया, जिसका तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने 1991 में अनावरण किया था। दुर्भाग्य से, इससे सीमित सफलता मिली, अधिकांश पूर्वी एशियाई देशों के लिए विशेष रूप से दक्षिण पूर्व एशियाई देशों ने महसूस किया कि भारत को आर्थिक रूप से बहुत कम परिणाम मिले, क्योंकि अमेरिका, जापान और चीन जैसी अन्य शक्तिशाली अर्थव्यवस्थाओं के विपरीत भारत की अत्यंत सीमित पारस्परिक आर्थिक गतिविधियां रही। इसके अलावा, आर्थिक विकास की रणनीति राज्य के नेतृत्व से बाजार–उन्मुख में परिवर्तित होने की प्रक्रिया धीमी और मंद थी। काफी आर्थिक उदारीकरण के बावजूद, पूर्वी एशिया में अपने समकक्षों के विपरीत भारत को विदेशी निवेशकों द्वारा यहां राज्य के नियंत्रण, निहित स्वार्थों, लालफीताशाही और वृहत पैमाने पर व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण व्यापार करने के लिए एक सुगम स्थान नहीं माना जाता था। राजनीतिक रूप से भी भारत को एक सीमित भूमिका का निर्वहन करते हुए देखा गया था, क्योंकि यह पूरे शीत युद्ध के दौरान इस क्षेत्र से अलग रहा था। सुरक्षा की प्रासंगिकता के संदर्भ में, प्रमुख धारणा यह थी कि यह अप्रासंगिक था क्योंकि अधिकांश का मानना था कि शीत युद्ध की समाप्ति के साथ यह क्षेत्र शांतिपूर्ण रहेगा।

हालांकि, दो घटनाओं ने कई मायनों में भारत को अपनी 'लुक ईस्ट' नीति को बढ़ाने में मद्द की। एक घटना थी, 1992 में फिलीपींस में विशाल अमेरिकी सैन्य ठिकानों के अप्रत्याशित रूप से बंद होने से एक तरह की शक्ति शून्यता पैदा हो गई। दूसरी घटना, यह चीन के साथ मेल खाती है, अपने उत्कृष्ट आर्थिक प्रदर्शन और अपनी सेना के आधुनिकीकरण पर सवार होकर और अधिक दबंग हो गया, विशेषतः दक्षिण चीन सागर में द्वीपों पर अपनी संप्रभुता के दावों के संबंध में।

जैसे ही चीन ने जापान और अमेरिका जैसे अन्य देशों को प्रतिस्थापित कर उनका स्थान लेना आरम्भ किया, अधिकांश देशों के लिए सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक भागीदार के रूप चीन उभरा, चीन पर अत्यधिक निर्भरता से कई देश चिंतित होने लगे। जब भारत की दीर्घकालीन क्षमता को पहचाना ही जा रहा था, कि 1997–98 के वित्तीय संकट से पूर्वी एशिया तबाह हो गया

था। नतीजन, भारत के प्रयासों के बावजूद, परिणाम बहुत उत्साहजनक नहीं थे। फिर भी, इस चरण का एक उल्लेखनीय आयाम यह है कि भारत क्षेत्रीय संगठन एसोसिएशन ऑफ साउथईस्ट एशियन नेशंस (आसियान) और कई क्षेत्रीय बहुपक्षीय तंत्रो के साथ कई संस्थागत तंत्र स्थापित करने में कामयाब रहा, जिसका वह नेतृत्व कर रहा था। भारत पहली बार 1992 में आसियान का क्षेत्रीय संवाद भागीदार बना, 1996 में पूर्ण संवाद भागीदार और आसियान क्षेत्रीय मंच (एआरएफ) का सदस्य बना। जिसे क्षेत्र के सुरक्षा मुद्दों को संबोधित करने के लिए आरम्भ किया गया था।

10.4 'लुकिंग' से एंगेजिंग ईस्ट (पूर्व से जुड़ाव) तक

2000 के दशक के आरम्भ तक, भारत के बारे में धारणाओं में दो कारणों से एक उल्लेखनीय परिवर्तन देखा जा सकता था। एक, भारतीय अर्थव्यवस्था ने काफी ध्यान आकर्षित करते हुए उच्च विकास दर के चरण में प्रवेश किया था। एवं दूसरा, पूर्वी एशिया में निरंतर राजनीतिक परिवर्तन, क्षेत्रीय विवादों पर तनाव, अमेरिकी सुरक्षा प्रतिबद्धता के बारे में अनिश्चितता और शक्ति के क्षेत्रीय संतुलन की कमी के कारण बढ़ती सुरक्षा चिंताएं। आसियान विशेष रूप से भारत को एक संभावित आर्थिक महाशक्ति के रूप में और अवसरों वाले देश के रूप में देखने लगा। इसके अलावा, भारत की अपनी पर्याप्त सैन्य क्षमता को देखते हुए, भारत को क्षेत्रीय सुरक्षा में एक स्थिर शक्ति के रूप देखा गया था।

2000 और 2014 के मध्य का यह चरण उल्लेखनीय है क्योंकि भारत 'लुक ईस्ट से पूर्व से जुड़ाव की ओर बढ़ रहा था। यह अब दक्षिण पूर्व एशिया और आसियान तक ही सीमित नहीं था, बल्कि शेष पूर्वी एशिया तक अपनी पहुंच बनाने लगा। जबकि चीन सबसे बड़े व्यापारिक भागीदार के रूप में उभरा, एक ओर भारत–जापान संबंधों में और दूसरी ओर भारत–अमेरिका संबंधों में, विशेष रूप से पूर्वी एशिया के संदर्भ में एक मौलिक परिवर्तन देखा जा सकता है। एक बहुआयामी दृष्टिकोण के साथ एक अधिक सुदृढ़, बहुआयामी नीति आकार लेने लगी। इसमें मुख्य रूप से तीन मुख्य आयाम शामिल थे, जिनकी संक्षेप में नीचे चर्चा की गई हैं।

10.4.1 राजनीतिक जुड़ाव

राजनीतिक जुड़ाव के संदर्भ में, इसे दो आयामी दृष्टिकोण के रूप में माना जा सकता हैं। सर्वप्रथम, क्षेत्रीय बहुपक्षीय संस्थानों, विशेष रूप से आसियान के साथ संबंध स्थापित करना। ऊपर उल्लिखित अन्य के अलावा, भारत और आसियान ने 2002 में शिखर बैठक की स्थापना की, ताकि सर्वोच्च राजनीतिक नेता नियमित आधार पर बातचीत कर सके। भारत पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन (ईएएस) का संस्थापक सदस्य भी बन गया, जिसे 2005 में शुरू किया गया था, 2010 में बनी आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक–प्लस (एडीएमएम–प्लस) के सदस्य के रूप में भी स्थापित हुआ। दूसरा, चुनिंदा देशों के साथ द्विपक्षीय संबंधों को गुणात्मक रूप से उन्नत करने के लिए। इनमें से सबसे उल्लेखनीय सिंगापुर, वियतनाम, जापान, इंडोनेशिया, म्यांमार आदि थे।

10.4.2 आर्थिक संपर्क

दूसरा आयाम उन आर्थिक संबंधों से संबंधित है जो भारत ने बनाए हैं। चूंकि 'लुक ईस्ट' नीति की शुरूआत में आर्थिक अनिवार्यताएं एक तरह से महत्वपूर्ण थीं, इसलिए नई दिल्ली ने आरम्भ

से ही उन्हें गुणात्मक रूप से सुधारने के लिए कड़ी मेहनत की। विचार यह था कि पूर्वी एशियाई गतिशीलता के साथ एकीकृत होना और उसमें भाग लेना था। विभिन्न कारणों से, यह 'लुक ईस्ट' नीति के पहले दशक में बहुत उत्साहजनक नहीं रहा क्योंकि यह वृहत निवेश को आकर्षित करने में विफल रहा जिसकी उसने अपेक्षा की थी। चीनी एवं दक्षिण पूर्व एशियाई अर्थव्यवस्थाएं भारत की तुलना में कहीं अधिक आकर्षक बना रहीं। 2000 के दशक की शुरूआत से चीजे निरंतर परिवर्तित होने लगी, उस समय तक अधिकांश देशों ने वित्तीय संकट के प्रभाव को दूर कर लिया था और भारत की उच्च विकास दर ने निवेशकों का अधिक ध्यान आकर्षित किया था। व्यापक आर्थिक सहयोग पर ढ़ांचागत समझौते की रूपरेखा भारत ने 2003 में आसियान को पेश की, इसने दोनों के बीच व्यापार को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया। इसमें तीन घटक शामिल थे– वस्तुओं, सेवाओं और निवेश में व्यापार। ट्रेड इन गुड्स एग्रीमेंट 2010 में आरम्भ हुआ, जिसमें 2013 और 2016 के बीच 80 प्रतिशत से अधिक व्यापारिक उत्पादों पर आयात शुल्क को हटाने की बात की गई थी और आसियान के साथ ट्रेड इन सर्विसेज एंड इनवेंस्टमेंट को 2013 में अंतिम रूप दिया गया था। 2015 और 2017 के बीच व्यापार में मंदी (एक वैश्विक घटना) के बावजूद इन समझौतों से आसियान देशों के साथ भारत के आर्थिक संबंधों को बढ़ावा मिलने की उम्मीद बनी रही। द्विपक्षीय व्यापार 2000 में लगभग 6 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2016 तक 65 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक हो गया। इसी प्रकार, एफडीआई प्रवाह में भी दोनों तरह से बड़े पैमाने पर वृद्धि हुई। जबकि 2010 और 2016 के बीच आसियान देशों से भारत में लगभग 50 बिलियन अमेरिकी डॉलर आया, इस अवधि के दौरान आसियान में भारतीय एफडीआई 40 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक गया। इसी तरह के रूझान पूर्वी एशिया के अन्य देशों जैसे चीन, जापान और दक्षिण कोरिया के संबंध में भी देखें गए। फिर भी इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि भारत अन्य बड़ी अर्थव्यवस्थाओं से बहुत पीछे रहा। उदाहरणार्थ, 2016 में चीन–आसियान व्यापार 500 अरब डॉलर से अधिक था, जबकि भारत के साथ यह 65 अरब डॉलर था।

विश्व व्यापार संगठन (डब्लूटीओ) के दोहा दौर की वार्ता में गतिरोध का अंत करने के लिए धन्यवाद, क्षेत्रीय व्यापार व्यवस्था (आरटीए) ने बहुत महत्व प्राप्त कर लिया। व्यापार पर पूर्वी एशियाई देशों की विकट निर्भरता को देखते हुए, पिछले एक दशक या उससे आगे द्विपक्षीय और क्षेत्रीय बहुपक्षीय व्यापार समझौतों की संख्या में वृद्धि हुई है। भारत ने भी एक समूह के रूप में आसियान के अलावा जापान, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया, मलेशिया जैसे देशों के साथ व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते (सीईपीए) पर हस्ताक्षर किए है एवं कई अन्य देशों के साथ भी बातचीत कर रहा हैं।

एक उल्लेखनीय पहलू क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी (आरसीईपी) वार्ता में भारत की भागीदारी है। मुक्त व्यापार समझौते मे आसियान के 10 देशो एवं इसके छह सहभागीयों के साथ आसियान को मिलाकर बने आरसीईपी का उद्देश्य दुनिया का सबसे बड़ा मुक्त व्यापार क्षेत्र निर्मित करना रहा। यह आसियान की पहल से शुरू हुआ, कई दौर की बातचीत के बाद, आरसीईपी को 2017 के अंत तक अंतिम रूप दिए जाने की उम्मीद थी। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। भारत नवंबर 2019 में थाईलैंड में हुई बैठक में आरसीईपी से यह शिकायत करते हुए बाहर हो गया कि उसके आर्थिक हितों को संबोधित नहीं किया गया। भारत चाहता था कि आरसीईपी सेंवाओं में व्यापार को शामिल करे, इसके अलावा वह भारत में सस्ते चीनी आयात की आशंका को रोकने के लिए स्वतः सक्रियता का उपयोग करना चाहता था।

आरसीपीईई अभी मृतप्राय नहीं हुआ है, एवं भारत हमेशा के लिए इससे बाहर नहीं निकला है। एक बार जब आरसीपीईई को अंतिम रूप दे दिया जाएगाा तो यह दुनिया के सबसे बड़े मुक्त व्यापार क्षेत्र में प्रवेश करेगा, जिसमें दुनिया की लगभग 50 प्रतिशत आबादी एवं वैश्विक सकल उत्पाद का 40 प्रतिशत से अधिक शामिल होगा, जोकि पीपीपी के संदर्भ में संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय संघ दोनों से अधिक हैं।

पूर्व एवं दक्षिण पूर्व एशिया, किसी भी पैमाने से दुनिया का सबसे गतिशील क्षेत्र है, जिसमें 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक विदेशी मुद्रा भंडार के साथ वृहत स्तर पर और तेजी से विस्तार करने वाले बाजार शामिल हैं। इसके अलावा, इस क्षेत्र को मजबूत मूल्य श्रृंखलाओं और उत्पादन नेटवर्क के विकास से भी चिंह्नित किया गया है, जो भारत के आर्थिक एकीकरण में तेजी लाने, विदेशी निवेश को आकर्षित करने और विशेष रूप से भारत के विनिर्माण क्षेत्र को परिवर्तित करने में मद्द करेगा। आरसीईपी का लाभ उठाने के लिए भारत को बहुत कुछ करना हैं। किसी भी दृष्टिकोण से, इसमें कोई संदेह नहीं है कि भारत का आर्थिक भविष्य इस क्षेत्र के साथ हैं।

10.4.3 रक्षा और सामरिक सहयोग

'लुक ईस्ट' नीति का तीसरा उल्लेखनीय आयाम भारत की रक्षा और सुरक्षा की बातचीत में महत्वपूर्ण परिवर्तन है। वास्तव में, 'लुक ईस्ट' नीति के आर्थिक या राजनीतिक पहलुओं की तुलना में रक्षा/सामरिक संबंध कहीं अधिक मजबूत प्रतीत होते है। इसमें गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल हैं, जो इस प्रकार है– संयुक्त अभ्यास, प्रशिक्षण, उच्च स्तरीय दौरे, सुरक्षा संवाद, रणनीतिक साझेदारी और हथियारों के निर्यात के उदाहरण भी।

1980 के दशक में, दक्षिण पूर्व एशिया के कई देशों ने भारतीय नौसेना के विस्तार और आधुनिकीकरण के बारे में चिंता व्यक्त की थी, विशेष रूप से इसलिए कि पोर्ट ब्लेयर सैन्य अड्डा की भू–रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण मलक्का जलडमरूमध्य से निकटता हैं, जिसके माध्यम से लगभग 40 प्रतिशत वैश्विक व्यापार गुजरता है। यह माना गया था कि इसकी क्षमताओं को देखते हुए, यदि जरूरत पड़ी तो भारतीय नौसेना मलक्का स्ट्रेट को बाधित कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त, शीत युद्ध की समाप्ति ने नई दिल्ली को उपरोक्त आशंकाओं को दूर करने एवं इन देशों के साथ रक्षा संबंधों के पुनर्निर्माण का एक उत्कृष्ट अवसर प्रदान किया। इसकी शुरूआत इंडोनेशिया और मलेशिया जैसे प्रमुख दक्षिण पूर्व एशियाई नौसेनाओं के वरिष्ठ अधिकारियों को अंडमान में आमंत्रित करने के साथ हुई और शीघ्र ही इसने सरल संयुक्त अभ्यासों का आयोजन किया, जो धीरे–धीरे गहन हो रहा है। अब, भारत संचार की समुद्री लाइनों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए न केवल मलक्का जलडमरूमध्य के करीब इंडोनेशिया एवं थाईलैंड के साथ संयुक्त गश्त करता है बल्कि द्विपक्षीय और बहुपक्षीय दोनों स्तरों पर पूर्वी एशिया के अधिकांश देशों के साथ कई तरह के अभ्यास भी करता है। बहुपक्षीय स्तर पर, भारत ने 1995 में पोर्ट ब्लेयर में पूर्वी एशिया और हाल ही में हिंद महासागर के द्वीप राज्यों की नौसेनाओं को शामिल करते हुए दो–दो साल के अंतराल पर नौसैनिक मिलन आरम्भ किया। बहुपक्षीय अभ्यासों का दूसरा पहलू भारत, अमेरिका और जापान के बीच मालाबार संयुक्त नौसैनिक अभ्यास है। रक्षा सहयोग का दूसरा आयाम वह प्रशिक्षण है जो भारतीय रक्षा प्रतिष्ठान प्रदान करते है। उदाहरण के लिए, 1993 के एमओयू के हिस्से के रूप में, भारत ने मलेशियाई पायलटों और जमीनी कर्मियों को मिग–29 लड़ाकू विमान उड़ाने के

लिए प्रशिक्षित किया। अन्य सैन्य क्षेत्रों में इसी तरह की व्यवस्था पर कई देशों के साथ सहमति हुई है, जो प्रमुख उन्नत प्रशिक्षण संस्थानों जैसे राष्ट्रीय रक्षा कॉलेज और रक्षा सेवा स्टाफ कॉलेज, भारतीय सैन्य अकादमी आदि में प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। तीसरा आयाम कई सुरक्षा संवादों से संबंधित है, जो भारत द्विपक्षीय और सामरिक भागीदारी के रूप में आयोजित करता हैं, जो नई दिल्ली ने कई देशों के साथ जैसे जापान, इंडोनेशिया, मलेशिया, वियतनाम, सिंगापुर इत्यादि से बनाई है। अंत में, भारत ने म्यांमार और वियतनाम जैसे देशों को कुछ रक्षा संबंधी हार्डवेयर निर्यात करना शुरू कर दिया है।

रक्षा एवं सुरक्षा संबंधी संपर्क और बातचीत, जो विगत कुछ वर्षों में कई गुना बढ़ी है, जो पूर्वी एशिया में बढ़ती सुरक्षा चिंताओं का एक संकेत है, जहां भारत को क्षेत्रीय शांति एवं स्थिरता में योगदान कें लिए जाता है तथा भारत को अपनी बढ़ती आकांक्षाओं और स्वयं का दांव पर लगने की बढ़ती प्रवृति के रूप में माना जाता है, इसलिए वह अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए उपयुक्त भूमिका का निर्वहन करता है। इस प्रकार, परिणामस्वरूप पूर्वी एशिया में उभरते हुए शक्ति संतुलन में भारत की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है।

बोध प्रश्न, अभ्यास 1

नोटः– i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर के लिए टिप्स (युक्तियों) हेतु इकाई के अंत में देखें।

1) वे कौन सी परिस्थितियाँ थीं जिनके कारण 'लुक ईस्ट' नीति की शुरूआत करने की आवश्यकता पड़ी ?

....

....

....

....

....

....

2) 'लुक ईस्ट' नीति के विभिन्न रूप कौन से हैं?

....

....

....

....

....

....

10.5 महा शक्तियाँ और 'लुक ईस्ट' नीति

'लुक ईस्ट' नीति केवल मजबूत राजनीतिक, आर्थिक और रक्षा संबंधों से विकसित नहीं हुई थी, बल्कि पूर्वी एशिया के कई विकासों ने इसके निर्माण में भूमिका निभाई। शक्ति के वैश्विक संतुलन में एक टेक्टानिक (विवर्तनिक) परिवर्तन आया है। ये घटनाक्रम क्षेत्रीय आर्थिक और सुरक्षा ढ़ांचे में मूलभूत बदलाव को प्रभावित कर रहे हैं। भारत इस बदलाव का हिस्सा बन गया और अपनी 'लुक ईस्ट' नीति के माध्यम से, इस आर्थिक और तकनीकी रूप से गतिशील क्षेत्र के साथ अपने हितों एवं साझेदारी को संरेखित करने की मांग की। ऐतिहासिक महत्व का एक विलक्षण विकास चीन का उदय रहा है। एक आर्थिक और सैन्य शक्ति के रूप में चीन के अभूतपूर्व उदय एवं उसके प्रभाव का न केवल पूर्वी एशिया पर बल्कि भारत पर भी प्रभाव पड़ रहा है। यह केवल इसका (चीन) का उदय नही है जो चिंता पैदा कर रहा है, बल्कि इसके बढ़ती आक्रामक गतिविधियां भी है, जो विशेष रूप से इसके क्षेत्रीय दावों से संबंधित है, जिसका कई देशों के द्वारा प्रतिवाद किया गया है, ये विवादित क्षेत्र पूर्वी चीन और दक्षिण चीन सागर में है, इस प्रकरण ने कई देशों को चिंतित कर दिया है। एक उभरती हुई शक्ति के रूप में, यह यथास्थिति को चुनौती दे रही है और यदि इतिहास कोई मार्गदर्शक है, तो अक्सर इसके परिणामस्वरूप खूनी संघर्ष होते हैं। वह पटरी से उतर सकता है और इस क्षेत्र में हुई बड़ी आर्थिक प्रगति को खतरा पैदा कर सकता है। इस क्षेत्र में अमेरिका अपनी उपस्थिति में लगातार गिरावट दर्ज कर रहा है और इस क्षेत्र की सुरक्षा के प्रति उसकी प्रतिबद्धता में कमी हो रही है, अतः कई लोगों का मानना है कि भारत संभावित रूप से चीन का प्रतिकार कर सकता है और क्षेत्रीय स्थिरता में योगदान कर सकता है। यही कारण है कि क्षेत्रीय मामलों में अनिच्छुक भारत को शामिल करने के लिए आसियान, जापान, आस्ट्रेलिया आदि द्वारा बहुत अधिक उत्सुकता है। इस तरह 'लुक ईस्ट' नीति अपनी सफलता का श्रेय शीत युद्ध की समाप्ति से एशियाई क्षेत्र में आए अभूतपूर्व परिवर्तनों को देती है और भारत की कूटनीतिक कुशाग्रता एवं प्रयासों को कम देती है। किसी भी प्रकरण में, सिर्फ इसलिए कि भारत की भूमिका बढ़ रही है, इसका तात्पर्य यह नहीं है कि यह चीन के साथ टकराव की ओर ले जाएगा। वास्तव में, इस क्षेत्र के साथ दो सहस्राब्दियों से अधिक समय तक उनके जुड़ाव के बावजूद, उनके संबंध हमेशा शांतिपूर्ण रहे हैं क्योंकि यह क्षेत्र दोनों को फलने–फूलने के लिए पर्याप्त रणनीतिक स्थान प्रदान करता है। फिर भी, दोनों के बीच इतने मैत्रीपूर्ण संबंध और एक–दूसरे के बारे में संदेह को देखते हुए, चीन पूर्वी एशिया के साथ भारत के जुड़ाव का एक कारक बना रहेगा। दूसरी ओर, अमेरिका और जापान जैसे देश भारत से पूर्वी एशिया में अपनी भागीदारी बढ़ाने का आग्रह करते रहे हैं। इन देशों और भारत के बीच जारी किए गए लगभग हर द्विपक्षीय बयान में पूर्वी एशियाई सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देने के संदर्भ में अधिक सहयोग की बात कही जाती है। इस बहुपक्षीय जुड़ाव के हिस्से के रूप में 'क्वाड' समूह की संरचना की गई। इसमें 2007 से भारत, ऑस्ट्रेलिया, जापान और अमेरिका के साथ चतुश्कोणीय सुरक्षा वार्ता का हिस्सा रहा हैं। 'क्वाड' के तीन सदस्य अर्थात भारत, जापान और अमेरिका संयुक्त सैन्य 'मालाबार अभ्यास' का आयोजन करते रहते है। यह कोई नहीं कहता, लेकिन 'क्वाड' चीन की इंडो–पैसिफिक (हिन्द–प्रशांत) क्षेत्र में बढ़ती उपस्थिति को संतुलित करने और इस क्षेत्र में एक सामान्य सुरक्षा ढांचे के सृजन के लिए कृत–संकल्प है। समझौते के तहत 'क्वाड' का मंत्री स्तर पर संवाद के लिए निर्णय लेने से इसकी ओर लोगों का ध्यानाकर्षण हो रहा है। 'क्वाड' के मूल में यह विचार है

कि इंडो–पैसिफिक क्षेत्र एक 'खुला, समृद्ध और समावेशी' क्षेत्र के रूप में रहे और इसे बनाए रखा जाए।

10.6 'एक्ट ईस्ट' नीति

'लुक ईस्ट' नीति की उत्पत्ति, विकास और विभिन्न रूपरेखाओं की उपरोक्त पृश्ठभूमि में आगे हम 'एक्ट ईस्ट' नीति पर चर्चा करेंगें। यह स्वाभाविक है कि सवाल उठते है कि 'एक्ट ईस्ट' की नीति की घोषणा क्यों की गई है और यह 'लुक ईस्ट' नीति से कैसे भिन्न हैं। यह और कुछ नहीं बल्कि पूर्वी एशिया के साथ भारत के बढ़ते जुड़ाव का संकेत है। यह याद किया जा सकता है कि सरकार ने जैसा कि 'लुक ईस्ठ' नीति के मामले में नीति पत्र का अनावरण नहीं किया या इसमें कौन सी नई चीजें शामिल की जाएंगी। इस प्रकार, हमें 'एक्ट ईस्ट' नीति के महत्व को समझने के लिए शुरू की गई नई नीतियों पर निर्भर रहने की आवश्यकता है। बहरहाल, यह ध्यान में रखा जा सकता हैं कि यह नीति 'लुक ईस्ट' नीति का प्रतिस्थापन नहीं बल्कि इसका विस्तार है। यह विचार नए तत्वों और पहलुओं को नई नीति में शामिल करके इसके दायरे का विस्तार करने के लिए प्रतीत होता है जो कि एक तरफ पूर्वी एशिया के साथ भारत के संबंधों को और गाढ़ा कर सकते है एवं उन लिंक को मजबूत कर सकते है जो कमजोर है। स्पष्ट रूप से, भारत के तेजी से बढ़ते आर्थिक और सामरिक हितों के कारण इसकी आवश्यकता हो गई है। आइए अब हम उन पहलुओं को देखे जिन पर बल दिया जा रहा है। जैसा कि उल्लेख किया गया है, पूर्वी एशिया में गहन परिवर्तन देखा जा सकता है और एक उल्लेखनीय पहलू दुनिया में इसका तेजी से बढ़ता आर्थिक महत्व है। इसमें कोई शक नहीं है कि यह क्षेत्र शीघ्र ही वैश्विक आर्थिक विकास के प्रमुख चालक के रूप में उभरेगा। यह केवल चीन या भारत का उदय नहीं है, बल्कि सम्पूर्ण पूर्वी एशियाई क्षेत्र में दुनिया की लगभग 50 प्रतिशत आबादी भी इसमें शामिल है, जो बढ़ रही है, यह इतिहस में अभूतपूर्व घटना है। क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग बढ़ रहा है जिससे अधिक एकीकरण हो रहा है। ये वो पहलू है जो भारत के लिए सबसे ज्यादा मायने रखते हैं। उदाहरणार्थ, यदि कोई व्यापार का उदाहरण लेता है, तो दक्षिण एशिया (सार्क के देश) में अपने निकटतम पड़ोसियों के साथ भारत का व्यापार 2016–17 में 7 प्रतिशत से कम था, जबकि यह यूरोपीय संघ के साथ लगभग 13 प्रतिशत और पूर्वी एशिया से लगभग 30 प्रतिशत था। भारत का व्यापार किसी भी अन्य क्षेत्र की तुलना में इस क्षेत्र के साथ तेजी से बढ़ रहा हैं। इसी तरह, भारत में कुछ प्रमुख निवेशक पूर्वी एशिया से हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत का आर्थिक भविष्य पूर्वी एशिया में हैं, हालांकि, इसके अन्य बड़ी शक्तियों की तुलना में आर्थिक संबंध कमजोर है। 'मेक इन इंडिया' मोदी के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति का मूलमंत्र बन गया है। प्रधानमंत्री मोदी ने जिस 'एक्ट ईस्ट' नीति की घोषणा की, उसमें आर्थिक संबंधों का स्थान बढ़ रहा हैं क्योंकि वे सबसे कमजोर कड़ी रही है। जापानी सरकार द्वारा अगले पांच वर्षों में भारत के बुनियादी ढ़ांचे के विकास में लगभग 35 बिलियन अमेरिकी डॉलर के निवेश की घोषणा, मोदी की 2014 में शरद ऋतु में टोक्यो यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम था। इसके बाद शी जिनपिंग की सितंबर 2014 की यात्रा के दौरान 20 बिलियन अमेरिकी डॉलर के निवेश की प्रतिबद्धता के पश्चात्, मोदी ने कहा कि ''मैंने बुनियादी ढ़ांचे और विनिर्माण के क्षेत्रों में चीनी निवेश को आंमत्रित किया हैं। मुझे खुशी है कि भारत में दो चीनी औद्योगिक पार्क बनेंगे......पंचवर्षीय आर्थिक एवं व्यापार

विकास योजना एक महत्वपूर्ण कदम है।" इस प्रकार 'एक्ट ईस्ट' नीति स्पष्ट रूप से क्षेत्रीय आर्थिक मामलों में भारत की भागीदारी को गुणात्मक रूप से बढ़ाने के उद्देश्य से है। शेष पूर्वी एशिया के साथ निम्नस्तर के एकीकरण को तत्कालिक आधार पर संबोधित किया जा रहा है। उपरोक्त से जुड़ा दूसरा आयाम कई मायनों में भारत एवं पूर्वी एशिया के देशों के मध्य खराब संपर्क (कनेक्टिविटी) है, जो अपेक्षाकृत कमजोर बंधनों के लिए एक बड़ा अवरोध है। संपर्क का तात्पर्य केवल भौतिक नहीं है जैसे सड़क, रेल, वायु एवं समुद्र के मार्ग, बल्कि इसमें संस्थागत और लोगों से लोगों के बीच संपर्क भी शामिल है। जहां भारत ने संस्थागत संपर्क स्थापित करने में बेहतर प्रदर्शन किया हैं, वहीं अन्य मोर्चो पर उसे अभी लम्बा रास्ता तय करना हैं। वर्तमान में, अपने पूर्वोत्तर (नार्थईस्ट) के रास्ते से होते हुएं भारत, म्यांमार और थाईलैंड को शामिल करते हुए, त्रि–राष्ट्र राजमार्ग निर्मित कर रहा है, जिस पर सभी मौसमों में यातायात सुगमता से हो सकेगा। जब एकबार इस मार्ग का कार्य पूरा हो जाएगा, उसके बाद सैद्धांतिक रूप से वस्तुओं को दक्षिण पूर्व एशिया के मुख्य भूभाग के सभी देशों से होते हुए सिंगापुर तक पहुंचाया जा सकेगा। यह युंनान जैसे दक्षिण–पश्चिमी चीनी संभाग से भी जुड़ सकता हैं। दूसरे, कई समुद्री बंदरगाह का आधुनिकीकरण एवं विस्तार किया जा रहा है और भारत के पूर्वी तट के साथ नए भी बनाए जा रहे हैं। जहां तक हवाई संपर्क का सन्दर्भ है, भारत से लगभग सभी प्रमुख अड्डों से बड़ी संख्या में उड़ानें भरी जाती है, लेकिन दुर्भागय से उनमें से अधिकांश बैंकॉक, कुआलालंपुर और सिंगापुर जैसे शहरों तक सीमित है। उदाहरणार्थ, दक्षिण पूर्व एशिया के सबसे बड़े देश इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता के लिए सीधी उड़ान नहीं है। हवाई संपर्क बहुत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि यही एकमात्र तरीका है जिससे लोगों से लोगों के बीच संबंध बढ़ाया जा सकता है। जैसे–जैसे भारत के आर्थिक संबंध सुधरेंगे, आशा है कि हवाई संपर्क भी बेहतर हो जाएगें।

'एक्ट ईस्ट' नीति का तीसरा उल्लेखनीय आयाम पूर्वी एशिया में भारतीय प्रवासियों (डाऐस्पोरा) को शामिल करना हैं। उनके मूल देश और उनके निवास के देश को जोड़ने वाले सेतु के रूप में प्रवासियों की भूमिका बहुमूल्य है जिसे हाल ही में मान्यता मिली है। भारत के मामले में प्रवासी भारतीयों के महत्व पर 1980 के दशक में तीव्रता से ध्यान में आया, जब बड़ी संख्या में जो भारतीय खाडी देश गए, परिणामस्वरूप उस क्षेत्र में आर्थिक उछाल आया और उनके द्वारा अर्जित की गई आय भारत भेजी गई, जिसने भारत के विदेशी मुद्रा संकट का समाधान करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। विगत कुछ दशकों में, भारतीय प्रवासियों ने दुनिया भर में अपनी जगह अमीर एवं शिक्षित के रूप में बनाई है, जो भारतीय विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। जहां पिछली सरकारों ने प्रवासी भारतीयों को शामिल करने के लिए मंच तैयार किया, वहीं प्रधानमंत्री मोंदी ने कई सक्रिय उपायों के माघ्यम से इसे उच्च स्तर पर ले जा रहे है। उल्लेखनीय रूप से, पहले के नौकरशाही दृष्टिकोण के विपरीत, वह व्यक्तिगत रूचि ले रहे हैं। मोदी की प्रवासी भारतीय नीति की बानगी है कि वह उन देशों का दौरा करते है जिनमें पर्याप्त भारतीय बसते है, उन्हें सार्वजनिक सामाराहों में संबोधित करते है ताकि वह उनसे सीधे जुड़ सके और इस तरह अपनेपन की भावना का संचार हो सके। वह एक सुदृढ़ संदेश देने में कामयाब रहे कि धनी व्यवयायी भारत की सबसे तेजी से बढ़ती हुई विशाल अर्थवस्था में अधिकाधिक अवसरों का उपयोग कर सकते है, अन्य भी जरूरत पड़ने पर भारत पर भरोसा कर सकते है और सरकार उनके साथ खड़ी रहेगी। जहां तक दक्षिण पूर्व एशिया का संबंध है, मलेशिया और सिंगापुर की अपनी यात्राओं के दौरान भारतीय समुदायों के लिए उनके दो संबोधन उल्लेखनीय हैं क्योंकि ऐसा पहली बार

किसी भारतीय शीर्ष नेतृत्व ने किया है। अपने दोनों भाषणों में, उन्होंने मूल रूप से एक नए भारत के गुणों की प्रशंसा की, जो लोकतांत्रिक है, युवा ऊर्जा के साथ तेजी से बदल रहा है और सम्मान अर्जित कर रहा है क्योंकि यह सैन्य रूप से आश्वस्त है और आर्थिक रूप से परिणामी है। मलेशिया में उन्होंने कहा, ''मेरे लिए भारत अपने क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है। भारत भी दुनिया के प्रत्येक हिस्से में प्रत्येक भारतीय में मौजूद हैं। भारत आप में है.... आपके कर्मो में भारत की आत्मा बोलती है...आप भारत की भाषाओं, धर्मो और संस्कृतियों की विवधता को दर्शाते हैं। और आप सद्भाव की भावना के साथ एक साथ खड़े हैं, अन्य मलय भारतीयों के साथ ही नहीं, बल्कि सभी मलय लोगों के साथ......आपकी उपलब्धियों ने हमें गौरवान्वित किया है। आपने अपने हाथों से परिश्रम किया है। आपने गर्व और गरिमा के साथ यहां अपने जीवन का सृजन किया है।'' और ''प्रत्येक पीढ़ी के साथ आपने राजनीति, सार्वजनिक जीवन, सरकार और पेशेवर सेवाओं में अधिक सफलता हासिल की है।''

चौथा पहलू है पूर्वी एशिया में अपनी 'सॉफ्ट पावर' क्षमता को बढ़ाना और उसका लाभ उठाना हैं। यह चेतना हमेशा काफी उच्च रही है कि भारत एक प्राचीन सभ्यता है और इसने मध्य एशिया से लेकर पूर्वी एशिया तक लगभग पूरे एशियाई क्षेत्र का अत्यधिक प्रभावित किया है। यह अपने पूर्व की ओर के क्षेत्र में विशेष रूप से अधिक स्पष्ट है जिसके साथ इसने दो सहस्राबदी से अधिक समय पहले से संबंध स्थापित किए थे। इनके साथ जुड़े सुदृढ़ ऐतिहिासिक, सांस्कृतिक और अन्य संबंधों को अक्सर 'सॉफ्ट पावर' का एक महत्वपूर्ण स्रोत कहा जा सकता है। भारत उन बहुत कम देशों में से एक है, जो दक्षिण पूर्व एशिया के साथ सदियों पुराने संबंधों का दावा कर सकता हैं। इन प्राचीन संबंधों के माध्यम से भारत ने जिन वृहत सांस्कृतिक और प्रभावों का प्रयोग किया है, वे कहीं अधिक स्थायी और सुदृढ़ है तथा इसलिए संभावित रूप से 'सॉफ्ट पावर' प्रभाव का भंडार बन सकता है, यदि इसे उचित रूप से पोशित एवं प्रसारित किया जाए। भारत मे विलम्ब से इस बात की मान्यता मिली कि प्राचीन सांस्कृतिक और आध्यात्मिक बंधनों का अधिक लाभकारी उपयोग किया जा सकता है। इस प्रकार, सांस्कृतिक और अन्य संबंधों को मजबूत करना नई संशोधित 'एक्ट ईस्ट' नीति के समूह का एक हिस्सा बन गया है। थाईलैंड से लेकर चीन तक और म्यांमार से लेकर जापान तक लगभग प्रत्येक देश में किसी न किसी रूप में मजबूत भारतीय प्रभाव देखा जा सकता है। जबकि बौद्ध धर्म के माध्यम से आध्यात्मिकता में इसका योगदान सबसे अधिक दृश्यमान एवं प्रमुख है, वास्तव में यह वृहत क्षेत्र में भिन्न—भिन्न डिग्री तक फैला हुआ है, जैसे— नृत्य और नाटक, भाषा और साहित्य, कला और वास्तुकला, अनुष्ठान एवं अंधविश्वास आदि में।

यह उल्लेखनीय है कि दक्षिण पूर्व एशिया के कई देशो में संसाधनों की समृद्ध और प्रचुर मात्रा उपलब्ध है इसके बारे जागरूकता रही, इसका वर्णन प्राचीन भारतीय महाकाव्यों जैसे कि रामायण और महाभारत मे सुवर्ण भूमि (स्वर्ण भूमि) और सुवर्ण द्वीप (स्वर्ण द्वीप) में किए संदर्भो में स्पष्ट होता है। पूरे क्षेत्र में कई हिंदू और बौद्ध राज्यों का उदय हुआ। इंडोनेशिया और मलेशिया जैसों देशों में इस्लाम मतावलम्बी बहुसंख्यक में होने के बावजूद वहां भारतीय संस्कृति की जड़े आज भी मजबूत है।

ये संबंध जो दीर्घकाल से जीवंत थे और महत्वपूर्ण रूप से शांतिपूर्ण थे एवं इनमें किसी भी तरह से एक दूसरे को अपने अधीन करने का प्रयास जानकारी में नहीं है। हांलाकि, वे भारत और पूर्वी एशिया (जापान और थाईलैंड को छोड़कर) में उपनिवेशवाद की शुरूआत से बुरी तरह परेशान थे। बाद में संबंधों को इस तरह से परिवर्तित कर दिया गया कि वे मुख्य रूप से औपनिवेशिक हितों की सेवा करते थे। 'एक्ट ईस्ट' नीति के केंद्रीय क्षेत्रों में से एक

सांस्कृतिक, संस्थागत, भाषाई एवं अन्य संबंधों को बढ़ावा देना है, जो भारतीय हितों को आगे बढ़ाने के अलावा लोगों से लोगों के संपर्क (प्यूप्ल–टू–प्यूप्ल कान्टैक्ट) में भी योगदान देगा। अंततोगत्वा, पूर्वी एशियाई क्षेत्र शीत युद्ध की समाप्ति के बाद राजनीतिक अस्थिरता और वृहत सुरक्षा अनिश्चितता का सामना कर रहा है, कई देशो का मानना है कि भारत इस क्षेत्र में शांति और स्थिरता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकता है। निस्संदेह, भारत के रक्षा और सुरक्षा संबंध एवं सहयोग निरंतर बढ़ रहे हैं। अब भारत में यह अहसास बढ़ रहा है कि वह केवल इन संबंधों का बनाने के बजाय अपने राजनयिक हितों को आगे बढ़ाने के लिए अपनी सैन्य शक्ति का लाभ उठा सकता हैं। रक्षा कूटनीति 'एक्ट ईस्ट' नीति का एक महत्वपूर्ण आयाम बनती जा रही हैं। इस मोर्चे पर पहले की हिचकिचाहट को कई सक्रिय पहलों द्वारा परिवर्तित कर दिया गया है। यह द्विपक्षीय और बहुपक्षीय दोनों स्तरों पर किया जा रहा है। उदाहरणार्थ, भारत ने वियतनाम को खुले समुद्र में गश्ती नौकाओं और अन्य उपकरणों की आपूर्ति करके उसकी क्षमताओ का बढ़ाने के लिए उसे 600 मिलियन अमेरिकी डॉलर का उधार प्रदान किया है। इसी तरह से भारत कई अन्य देशों के साथ रक्षा सहयोग बढ़ा रहा है। यह पूर्वी एशियाई क्षेत्रीय सुरक्षा में भारत की बढ़ती हिस्सेदारी का संकेत है और साथ ही वह इसके ऊपर लाभ उठा रहा हैं।

बोध प्रश्न, अभ्यास 2

नोटः– i) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों की जांच इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से करें।

1) "एक्ट ईस्ट" नीति "लुक ईस्ट" नीति से किस प्रकार भिन्न है?

....

....

....

....

....

....

10.7 'एक्ट ईस्ट' नीति और क्षेत्रीय सुरक्षा

'एक्ट ईस्ट' नीति न केवल पूर्वी एशियाई देशों के साथ विविध मोर्चों पर बेहतर संबंध स्थापित कर रही है, बल्कि कई अन्य विमर्श भी हैं। उभरती क्षेत्रीय सुरक्षा उनमें से एक है। आमातौर पर माना जाता है कि, हांलाकि यह क्षेत्र अभूतपूर्व आर्थिक विकास एवं प्रगति का अवलोकन कर रहा है, राजनीतिक रूप से यह कई कारणों से अत्यधिक अनिश्चितता का सामना कर रहा हैं। भारत को यहां आमतौर पर क्षेत्रीय सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देने की क्षमता रखने वाले देश के रूप में देखा जाता है, विशेषरूप से शक्ति के एक मजबूत क्षेत्रीय संतुलन के निर्माण में। आमतौर पर यह माना जाता है कि कोई विश्वसनीय क्षेत्रीय सुरक्षा ढ़ांचा नहीं है जो शांति और स्थिरता सुनिश्चित कर सकें, जबकि इस क्षेत्र में राजनीतिक उथल–पुथल

देखी जा सकती हैं। जबकि राय अलग–अलग है, वर्तमान परिस्थितियों में एक क्षेत्रीय बहुध्रुवीयता है, वास्तव में जिसमें सभी महाशक्तियों लगी रहती है और सुनिश्चित करती है कि कोई भी एक शक्ति बहुत अधिक हावी न हो जाएं। परिणामस्वरूप, पांरपरिक शक्तियों (मुख्यतः अमेरिका और पूर्व सोवियत संघ शीत युद्ध के दौरान) के पतन और नए शक्ति केंद्रो (जैसे चीन, भारत और जापान) के उदय के साथ अन्य महत्वपूर्ण विकास क्षेत्रीय बहुपक्षवाद है जो आर्थिक और सुरक्षा दोनों ही क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर जड़े जमा रहा है। जबकि आर्थिक बहुपक्षवाद ने काफी प्रगति की है, वहीं सुरक्षा बहुवाद प्रांरभिक अपेक्षा पर खरा नहीं उतरा है।

यह पूर्वी एशियाई क्षेत्र की विशाल जटिलता और उच्च अपेक्षाओं का प्रतिबिंब है। फिर भी, इसमें कोई संदेह नहीं है कि क्षेत्रीय बहुपक्षीय मंचों ने सभी हितधारकों को आमने–सामने बातचीत के लिए लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसने सुरक्षा नीतियों में आपसी विश्वास के निर्माण और पारदर्शिता को बढ़ावा देने में योगदान दिया हैं। इनमें से प्रमुख है आसियान क्षेत्रीय मंच (एआरएफ) और आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक–प्लस (प्लस का तात्पर्य आसियान के संवाद भागीदार हैं), जो प्रकृति में अखिल–पूर्व एशियाई स्तर का हैं।

आपकी प्रगति के परिक्षण हेतु अभ्यास 3

नोटः– i) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों की जांच इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से करें।

1) ऐसा कहा जाता है कि शक्ति का वैश्विक संतुलन एशिया की ओर स्थानांतरित हो रहा है। क्या आप सहमत हैं?

....

....

....

....

....

....

2) पूर्वी एशिया के साथ भारत के अनुबंध के महत्व की व्याख्या करें।

....

....

....

....

....

....

10.8 सारांश

सर्वसम्मति से सभी स्वीकार करते है कि 'एक्ट ईस्ट' नीति ने पूर्व की 'लुक ईस्ट' नीति की तुलना में एक बड़ा आयाम हासिल कर लिया है। जहां 'लुक ईस्ट' नीति कुछ परिस्थितियों के मद्देनजर आरम्भ की गई थी, जब भारत राजनीतिक रूप से दिशाविहीन था और कई मायनों में सोवियत संघ के पतन और शीत युद्ध की समाप्ति के पश्चात् अलग–थलग पड़ गया था (एवं इसके साथ ही गुटनिरपेक्ष आंदोलन व्यर्थ हो गया था, वैसे भी इसका किसी भी अंतर्राष्ट्रीय प्रकरण में सीमित प्रभाव पड़ा)। विगत् दशकों में अदूरदर्शी और पूर्णतः अविवेकी नीतियों के कारण संकट के दौर से गुजर रही अर्थव्यवस्था की वजह से आर्थिक अनिवार्यता बहुत तीव्र हो गई थी। नई दिल्ली को नव–उदारवाद द्वारा निर्देशित एक नई आर्थिक नीति को अपनाना पड़ा। इसमें आयात–निर्यात व्यवस्था का उदारीकरण, विदेशी विनिमय दर पर नियंत्रण हटाना, विनियमन एवं निजीकरण और अर्थव्यवस्था में विदेशी निवेश का प्रोत्साहित करना शामिल था। पूर्वी एशिया एक स्वाभाविक पसंद था, एक ऐसा क्षेत्र जिसके साथ भारत के सदियों पुराने संबंध थे और जो आर्थिक रूप से सबसे जीवंत रूप में उभरा था। हालांकि, प्रारंभिक चरण निराशाजनक था, क्योंकि संबंध अपेक्षित रूप से आगे नहीं बढ़े। कुछ नतीजों ने, जैसे विशेषरूप से महाशक्तियो की सैन्य वापसी, चीन का उदय और राजनीतिक अनिश्चितता के भय ने भारत की बहुत मद्द की। इस प्रकार, भारतीय राजनयिक प्रयासों से अधिक, आसियान देशों ने भारत को एक बड़ी भूमिका का निर्वहन करने के लिए प्रेरित किया। 'लुक ईस्ट' नीति धीरे–धीरे राजनीतिक, सुरक्षा और आर्थिक क्षेत्रों में अपनी छाप छोड़ने लगी।

तब तक, 2014 में मोदी सरकार के सत्ता में आने के पश्चात् 'एक्ट ईस्ट' नीति की शुरूआत की गई, भारत के संबंध उल्लेखनीय प्रगति के साथ मजबूत हो रहे थे। इसके अलावा, नई दिल्ली सैन्य और आर्थिक रूप से पहले से कहीं अधिक आश्वस्त है और एक बड़ी जिम्मेदारी निभाने एवं इस क्षेत्र में एक वृहत भूमिका निभाने के लिए तैयार है। आसियान और अन्य क्षेत्रीय बहुपक्षीय ढ़ांचे के साथ सक्रिय जुड़ाव आरम्भ हुआ। 'एक्ट ईस्ट' नीति के अंतर्गत, कई अतिरिक्त कदम उठाए गए हैं, जैसे कि बेहतर एवं विस्तारित संपर्क (कनेक्टिविटी), 'सॉफ्ट' शक्ति को बढ़ावा देना, भारतीय प्रवासियों को शामिल करना, सुदृढ़ सुरक्षा संबंध बनाना, एवं पूर्वी एशियाई आर्थिक सहयोग के प्रयासों में सक्रिय भागीदारी, और क्षेत्रीय मामलों में समग्र रूप से विस्तारित भूमिका का निर्वहन करना। इसमें कोई संदेह नहीं है कि 'लुक ईस्ट/एक्ट ईस्ट' नीति भारत की विदेश नीति में बहुत अधिक महत्व प्राप्त करना जारी रखेगी, जबकि बहुचर्चित एशियाई शताब्दी का तमका पहले से ही हम पर है। जब से भारत ने 1990 के दशक के आरम्भ मे 'लुक ईस्ट' नीति की शुरूआत की, तब से यह राजनीतिक, रणनीतिक और आर्थिक पहलुओं को शामिल करते हुए एक व्यापक, बहु–आयामी नीति के रूप में विकसित हुई है। यद्यपि इस नीति को धीरे–धीरे वृहत पूर्वी एशियाई क्षेत्र में विस्तारित किया गया है, आसियान इस नीति के केंद्र में बना हुआ है। मोदी सरकार की 'एक्ट ईस्ट' नीति सामान्य रूप से पूर्वी एशिया और विशेष रूप से दक्षिण पूर्व एशिया के साथ कई अन्य तत्वों को शामिल करके संबंधों को और विस्तार एवं गुणात्मक रूप से उन्नत करने का एक प्रयास हैं। इनमें से प्रमुख है संपर्क के माध्यमों को बढ़ाना, ताकि भारत क्षेत्रीय आर्थिक गतिशीलता का हिस्सा बने, यद्यपि क्षेत्रीय मूल्य श्रृंखला में अधिकाधिक भागीदारी हां और 'सॉफ्ट पावर' क्षमता को बढ़ाने के लिए सांस्कृतिक एवं अन्य विशेषताओं, विशेष रूप से रक्षा और सुरक्षा

लिंक का उपयोग करें। भारत के बढ़ते आर्थिक और रणनीतिक दांवो के साथ–साथ पूर्वी एशिया में गहन परिवर्तन देखा जा रहा है, आने वाले वर्षों में इस क्षेत्र के साथ नई दिल्ली के जुडाव और भागीदारी में वृद्धि होने की संभावना हैं।

10.9 संदर्भ

- गणपति, एम., " 'लुक ईस्ट – एक्ट ईस्ट' डाइमेंशन ऑफ इंडियाज़ फॉरन पॉलिसी", इंडियन फॉरन अफेयरस् जरनल, जनवरी–मार्च 2015, वोल्यूम. 10 इशु 1, पीपी. 63–73।
- कैली, एंड्रयु, " लुकिंग बैक ऑन लुक ईस्ट : इंडियाज़ पोस्ट–काल्ड वॉर शिफ्ट टुवर्ड एशिया", जरनल ऑफ डिप्लोमेसी एंड इंटरनैशनल रिलेशनस्, स्प्रिंग/सम्मर 2014, वोल्यूम 15, इशु 2, पी 81–93।
- राम, अमरनाथ, एड़., "टू डिकेडस् ऑफ इंडियाज़ लुक ईस्ट पॉलिसी : पार्टनरशिप फाूर पीस, प्रागरेस् एंड प्राूस्पैरिटी (न्यू दिल्ली : इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयरस् : मनोहर पब्लिशरस् एंड डिस्ट्रिब्यूटरस्, 2012)
- सिकरी, राजीव, इंडियाज़ "लुक ईस्ट" पॉलिसी, एशिया–पैसिफिक रिव्यू, मे 2009, वोल्यूम 16, इशु 1, पीपी. 131–145।
- नाइडू, जी.वी.सी., "इंडिया एंड साउथईस्ट एशिया : फ्रॉम लुकिंग ईस्ट टु एक्टिंग ईस्ट" (विद जी. सचदेवा), इन एड. डेविड बी.एच.डिनून, चाइना, दी युनाइटिड स्टेटस्, एंड दी फ्यूचर ऑफ साउथईस्ट एशिया यू.एस.चाइना रिलेशनस्, वोल्यूम II (न्यू यार्क : न्यू यार्क युनिवर्सिटि प्रेस, मे 2017)
- ————————. "इंडिया एंड ईस्ट एशिया : दी लुक ईस्ट पॉलिसी", परसेप्शनस् : जरनल ऑफ इंटरनेशनल अफेयरस्, स्प्रिंग 2013, वोल्यूम 18 इशु 1, पीपी 52–74।
- ————————. फ्राम लुकिंग टु एनगेजिंग : इंडिया एंड ईस्ट एशिया (पैरिस : इंस्तित्यूत फ्रांसिआस् देस् रिलंशनस् इंतरनेशनालेस्, 2011)
- योंग, तान ताई, सी चाक, " दी इवोल्यूशन ऑफ इंडिया –आसिआन(ASEAN) रिलेशनस्" इंडिया रिव्यू. जनवरी – मार्च 2009, वोल्यूम 8 इशु 1, पीपी. 20–42।
- सातु, लिमाये, "इंडिया–ईस्ट एशिया रिलेशनस् : एक्टिंग ईस्ट अंडर प्राइम मिनिस्टर मोदी?", पेसनेट न्यूज़ लैटर, जनवरी 2015, इशु 5, पी.पी. 2–12।
- नाइडू, जी.वी.सी., "इंडिया एंड साउथईस्ट एशिया", इंटरनेशनल स्टडीज़, अप्रैल 2010, 47(2–4), पीपी. 285–304।
- नाइडू, जी.वी.सी., "इंडिया एंड साउथईस्ट एशिया : फ्रॉम लुकिंग ईस्ट टु एक्टिंग ईस्ट" (विद जी. सचदेवा), इन एड. डेविड बी.एच.डिनून, चाइना, दी युनाइटिड स्टेटस्, एंड दी फ्यूचर ऑफ साउथईस्ट एशिया यू.एस.चाइना रिलेशनस्, वोल्यूम II (न्यू यार्क : न्यू यार्क युनिवर्सिटि प्रेस, मे 2017)

10.10 बोध प्रश्नों के उत्तर, आपकी प्रगति के परिक्षण हेतु

बोध प्रश्न 1

1) आपका उत्तर खंड 10.4 (ईस्ट की ओर उन्नमुख होकर, जुडने का प्रयास) पर आधारित होना चाहिए।

बोध प्रश्न 2

1) आपका उत्तर खंड 10.6 ("एक्ट ईस्ट" नीति) पर आधारित होना चाहिए।

बोध प्रश्न 3

1) आपका उत्तर इस इकाई को पूरी तरह से पढ़ने और आपकी समझ पर आधारित होना चाहिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY